ना'त ख़्वां और नज़राना

Naa't Khwan Aur Nazrana (Hindi)

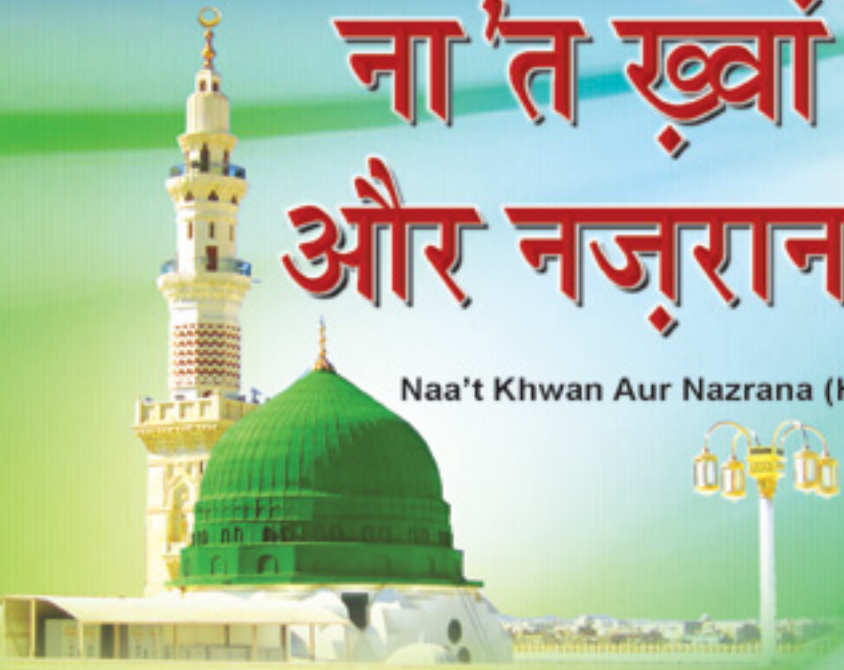

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी

مکتبۃ المدینہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

ना'त ख़्वां और नज़राना

ना'ते मुस्तफ़ा पढ़ना सुनना यक़ीनन निहायत उ़म्दा इबादत है मगर क़बूलिय्यत की कुन्जी इख़्लास है, ना'त शरीफ़ पढ़ने पर उजरत लेना देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। बराए करम ! सगे मदीना عُفِیَ عَنْہُ के मक्तूब के सिर्फ़ (24 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ क़ल्ब में इख़्लास का चश्मा मोजज़न होगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़ह़ुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़-ज़मत निशान है : जिस ने दिन और रात में मेरी त़रफ़ शौक़ व मह़ब्बत की वजह से तीन तीन मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर ह़क़ है कि वोह उस के उस दिन और रात के गुनाह बख़्श दे। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرانی ج۱۸ص۳۶۱حدیث۹۲۸ داراحیاء التراث العربی بیروت)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ सगे मदीना मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी की जानिब से बुलबुले मदीना, **मेरे मीठे मीठे म-दनी बेटे.....** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान سَلَّمَهُ الْبَارِیْ की मुअ़म्बरीं जबीं को चूमता हुवा, झूमता हुवा मुश्कबार व पुर बहार सलाम

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال

रज़ा जो दिल को बनाना था जल्वा गाहे ह़बीब
तो प्यारे क़ैदे ख़ुदी से रहीदा होना था

21 **स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र** 1425 को निगराने शूरा ने बाबुल मदीना कराची के ना'त ख़्वां इस्लामी भाइयों से "म-दनी मश्वरा" फ़रमाया । उन्हों ने जब ह़िर्सो त़मअ़ की मज़म्मत बयान कर के इस बात पर उभारा कि इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त में हर ना'त ख़्वां अपनी बारी आने पर ए'लान कर दे : "मुझे किसी क़िस्म का नज़राना न दिया जाए मैं उस को क़बूल नहीं करूंगा ।" इस पर आप ने हाथ उठा कर इस अ़ज़्म का इज़्हार फ़रमाया कि मैं اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ए'लान कर दिया करूंगा । **येह ख़बरे फ़रह़त असर सुन कर मेरा दिल ख़ुशी से बाग़ बाग़ बल्कि बागे़ मदीना बन गया । अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप को इस अ़ज़ीम म-दनी निय्यत पर इस्तिक़ामत बख़्शे । मेरे दिल से येह दुआ़एं निकल रही हैं कि मुझे और आप को और जिस जिस ने येह म-दनी निय्यत की है उस को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दोनों जहां में ख़ुश रखे, ईमान की ह़िफ़ाज़त और ह़त्मी मग़्फ़िरत से नवाज़े, मदीने के सदा बहार फूलों की त़रह़ हमेशा मुस्कुराता रखे, हुब्बे जाह व माल की अंधेरियों से निकल कर, इ़श्क़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रोशनियों में डूब कर, ख़ूब ना'तें पढ़ने सुनने की सआ़दत बख़्शे । काश ! ख़ुद भी रोते रहें और सामिई़न को भी रुलाते और तड़पाते रहें । रियाकारी से ह़िफ़ाज़त हो और इख़्लास की ला ज़वाल दौलत मिले ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

ना'त पढ़ता रहूं, ना'त सुनता रहूं, आंख पुरनम रहे दिल मचलता रहे

उन की यादों में हर दम मैं खोया रहूं, काश ! सीना महब्बत में जलता रहे

ना'त शरीफ़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल या दौराने ना'त लोग जब नज़राना ले कर आना शुरूअ़ हों उस वक़्त मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो इस त़रह़ ए'लान फ़रमा दीजिये :

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दा'वते इस्लामी के ना'त ख़्वां के लिये "म-दनी मर्कज़" की त़रफ़ से हिदायत है कि वोह किसी क़िस्म का नज़राना, लिफ़ाफ़ा या तोह़फ़ा ख़्वाह वोह पहले या आख़िर में या दौराने ना'त मिले क़बूल न करे । हम अल्लाह तआ़ला के आ़जिज़ व ना तुवां बन्दे हैं । बराए करम ! नज़राना दे कर ना'त ख़्वां को इम्तिह़ान में मत डालिये, रक़म आती देख कर अपने दिल को क़ाबू में रखना मुश्किल होता है । ना'त ख़्वां को इख़्लास के साथ सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा की त़लब में ना'त शरीफ़ पढ़ने दें लिहाज़ा नोटों की बरसात में नहीं बल्कि बारिशे अन्वारो तजल्लियात में नहाते हुए ना'त शरीफ़ पढ़ने दें और आप भी अदब के साथ बैठ कर ना'ते पाक सुनें.....

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये

शाहे कौसर की मीठी नज़र चाहिये

(ना'त ख़्वां येह ए'लान अपनी डायरी में महफ़ूज़ फ़रमा लें तो सहूलत रहेगी । اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

प्यारे ना'त ख़्वां ! ना'त ख़्वानी में मिलने वाला नज़राना जाइज़ भी होता है और ना जाइज़ भी । आयन्दा सुतूर बग़ौर पढ़ लीजिये, तीन[3] बार पढ़ने के बा वुजूद समझ में न आए तो उ-लमाए अहले सुन्नत से रुजूअ़ कीजिये ।

प्रोफ़ेश्नल ना'त ख़्वां

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्एे रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن की ख़िदमत में सुवाल हुवा : ज़ैद ने अपने पांच रुपै फ़ीस मौलूद शरीफ़ की पढ़वाई के मुक़र्रर कर रखे हैं, बिग़ैर पांच रुपिया फ़ीस के किसी के यहां जाता नहीं ।

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाबन इर्शाद फ़रमाया : ज़ैद ने जो अपनी मजलिस ख़्वानी ख़ुसूसन राग से पढ़ने की उजरत मुक़र्रर कर रखी है ना जाइज़ व ह़राम है इस का लेना उसे हरगिज़ जाइज़ नहीं, इस का खाना सरा-ह़तन ह़राम खाना है । उस पर वाजिब है कि जिन जिन से फ़ीस ली है याद कर के सब को वापस दे, वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को फैरे, पता न चले तो इतना माल फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ करे और आयन्दा इस ह़राम ख़ोरी से तौबा करे तो गुनाह से पाक हो । अव्वल तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे पाक ख़ुद उ़म्दा त़ाआ़त व अजल्ल इ़बादात से है और त़ाअ़त व इ़बादत पर फ़ीस

लेनी **ह़राम**[1]..... सानियन बयाने साइल से ज़ाहिर कि वोह अपनी शे'र ख़्वानी व ज़म्ज़मा सन्जी (या'नी राग और तरन्नुम से पढ़ने) की फ़ीस लेता है येह भी महूज़ **ह़राम** । फ़तावा आ़लमगीरी में है : गाना और अश्आ़र पढ़ना ऐसे आ'माल हैं कि इन में किसी पर उजरत लेना जाइज़ नहीं ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 724, 725, रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कज़ुल औलिया लाहोर)

जो ना'त ख़्वां इस्लामी भाई **T.V.** या मह़फ़िले ना'त में ना'त शरीफ़ पढ़ने की फ़ीस वुसूल करते हैं उन के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है। मैं ने अपनी त़रफ़ से नहीं कहा, अहले सुन्नत के इमाम, वलिय्ये कामिल और सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आ़शिक़े सादिक़ का फ़तवा जो कि यक़ीनन हुक्मे शरीअ़त पर मब्नी है, वोह आप तक पहुंचाने की जसारत की है, हुब्बे जाह व माल के बाइ़स त़ैश में आ कर तियूरी चढ़ा कर, बल खा कर उलटी सीधी ज़बान चला कर उ़-लमाए अहले सुन्नत की मुख़ा-लफ़त करने से जो ह़राम है, वोह ह़लाल होने से रहा, बल्कि येह तो आख़िरत की तबाही का मज़ीद सामान है ।

त़ै न किया हो तो.....

हो सकता है कि किसी के ज़ेह्न में येह बात आए कि येह फ़तवा तो उन के लिये है जो पहले से त़ै कर लेते हैं, हम तो त़ै नहीं करते, जो कुछ मिलता है वोह तबर्रुकन ले लेते हैं, इस लिये हमारे लिये जाइज़ है। उन की ख़िदमत में सरकारे **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक और फ़तवा ह़ाज़िर है, समझ में न आए तो तीन[3] बार पढ़ लीजिये :

1: इमाम, मुअज़्ज़िन, मुअ़ल्लिमे दीनियात और वाइज़ वग़ैरा इस से **मुस्तस्ना** हैं ।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या जि. 19 स. 486)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की । (عبدالرزاق)

तिलावते कुरआने अज़ीम ब ग़-रजे़ ईसाले सवाब व ज़िक्र शरीफ़ **मीलादे पाक** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रूर मिन जुम्ला इ़बादात व त़ाअ़त हैं तो इन पर इजारा भी ज़रूर ह़राम व मह़ज़ूर (या'नी ना जाइज़) । और इजारा जिस त़रह़ सरीह़ अ़क़्दे ज़बान (या'नी वाज़ेह़ क़ौल व क़रार) से होता है, उ़र्फ़न शर्तें **मा'रूफ़ुंव व मा'हूद** (या'नी राइज शुदा अन्दाज़) से भी हो जाता है म-सलन पढ़ने पढ़वाने वालों ने ज़बान से कुछ न कहा मगर जानते हैं कि देना होगा (और) वोह (पढ़ने वाले भी) समझ रहे हैं कि "कुछ" मिलेगा, उन्हों ने इस त़ौर पर पढ़ा, इन्हों ने इस निय्यत से पढ़वाया, इजारा हो गया, और अब **दो वजह से ह़राम** हुवा, (1) तो त़ाअ़त (या'नी इ़बादत) पर इजारा येह ख़ुद ह़राम, (2) दूसरे उजरत अगर उ़र्फ़न **मुअ़य्यन** नहीं तो उस की जहालत से इजारा फ़ासिद, येह दूसरा ह़राम । (मुलख़्ख़स अज़ : फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 19, स. 486, 487) लेने वाला और देने वाला दोनों गुनहगार होंगे । (ऐज़न, 495)

इस मुबारक फ़तवे से रोजे़ रोशन की त़रह़ ज़ाहिर हो गया कि साफ़ लफ़्ज़ों में तै न भी हो तब भी जहां **UNDERSTOOD** हो कि चल कर मह़फ़िल में कुरआने पाक, आयते करीमा, दुरूद शरीफ़ या ना'त शरीफ़ पढ़ते हैं, कुछ न कुछ मिलेगा रक़म न सही "सूट पीस" वग़ैरा का तोह़फ़ा ही मिल जाएगा और बानिये मह़फ़िल भी जानता है कि पढ़ने वाले को कुछ न कुछ देना ही है । बस ना जाइज़ व ह़राम होने के लिये इतना काफ़ी है कि येह "उजरत" ही है और फ़रीक़ैन (या'नी देने और लेने वाले) दोनों गुनहगार ।

क़ाफ़िलए मदीना और ना'त ख़्वां

सफ़र और खाने पीने के अख़राजात पेश कर के ना'तें सुनने की ग़रज़ से ना'त ख़्वां को साथ ले जाना जाइज़ नहीं क्यूं कि येह भी उजरत ही की सूरत है। लुत्फ़ तो इसी में है कि ना'त ख़्वां अपने अख़राजात ख़ुद बरदाश्त करे। ब सूरते दीगर क़ाफ़िले वाले मख़्सूस मुद्दत के लिये मत्लूबा ना'त ख़्वां को अपने यहां तन-ख़्वाह पर मुलाज़िम रख लें। म-सलन **ज़ी क़ा'दतुल हराम, ज़ुल हिज्जतिल हराम** और **मुहर्रमुल हराम** इन तीन[3] महीनों का इस तरह इजारा **(AGREEMENT)** करें : "फ़ुलां तारीख़ से ले कर फ़ुलां तारीख़ तक रोज़ाना इतने बजे से ले कर इतने बजे तक (म-सलन दोपहर तीन से ले कर रात नव बजे तक) इतने घन्टे (म-सलन छ[6] घन्टे) का आप से हम ने हर तरह की ख़िदमत के काम का इजारा किया और येह ख़िदमत आप से मक्के मदीने और मु-तअ़ल्लिक़ा सफ़र में ली जाएगी।" (अगर मुख़्तलिफ़ अय्याम में मुख़्तलिफ़ घन्टों में काम लेना है तो इन दिनों और घन्टों की ता'यीन (Fixing) के साथ बा क़ाइदा बयान किया जाए) अब इस दौरान चाहें तो उस से कोई सा भी जाइज़ काम ले लें या जितना वक़्त चाहें छुट्टी दे दें, हज पर साथ ले चलें और अख़राजात भी आप ही बरदाश्त करें और ख़ूब ना'तें भी पढ़वाएं। याद रहे! एक ही वक़्त के अन्दर दो जगह नोकरी करना या'नी इजारे पर इजारा करना **ना जाइज़** है। अलबत्ता अगर वोह पहले ही से कहीं नोकरी पर लगा हुवा है तो अब सेठ की इजाज़त से दूसरी जगह काम कर सकता है।

दौराने ना'त नोटें चलाना

सामिईन की तरफ़ से ना'त शरीफ़ पढ़ने के दौरान नोटें पेश करना और ना'त ख़्वां का क़बूल करना दुरुस्त है, अगर फ़रीक़ैन में तै कर लिया गया कि नोट लिफ़ाफ़े में डाल कर देने के बजाए दौराने ना'त पेश किये जाएं या तै तो न किया मगर दला-लतन साबित (या'नी **UNDERSTOOD**) हो कि महफ़िल में बुलाने वाला नोट लुटाएगा

तो अब उजरत ही कहलाएगी और **ना जाइज़**। बानिये महफ़िल जानता है कि नोटें नहीं चलाएंगे तो आयन्दा ना'त ख़्वां नहीं आएंगे और ना'त ख़्वां भी इसी लिये दिल चस्पी से आते हैं कि यहां नोटें चलती हैं तो कई सूरतों में येह लैन दैन भी उजरत बन जाएगा और सवाब की बजाए गुनाह व हराम का वबाल सर आएगा लिहाज़ा ना'त ख़्वां ग़ौर कर ले कि रिज़ाए इलाही मक़्सूद है या महूज़ रुपै कमाना ? काश ! ऐ काश ! सद करोड़ काश ! इख़्लास का दौर दौरा हो जाए, और ना'त ख़्वानी जैसी अ़ज़ीम सआ़दत को चन्द हक़ीर सिक्कों की ख़ातिर बरबाद करने वाली हिर्स की आफ़त ख़त्म हो जाए।

उन के सिवा किसी की दिल में न आरज़ू हो
दुन्या की हर तलब से बेगाना बन के जाऊं

नोटें लुटाने वालों को दा'वते फ़िक्र

सब के सामने उठ उठ कर नोट पेश करने वाला अपने ज़मीर पर लाज़िमी ग़ौर कर ले, कि अगर उस से कहा जाए : सब के सामने बार बार देने के बजाए ना'त ख़्वां को चुपके से इकठ्ठी रक़म दे दीजिये कि हदीसे पाक में है : **''पोशीदा अ़मल, ज़ाहिरी अ़मल से 70 गुना अफ़्ज़ल है।''** (فردوس الاخبار ج۳ ص۱۵۳ رقم ۴۲۴۸ دار الکتاب العربی) तो वोह चुपचाप देने के लिये राज़ी होता है या नहीं ? अगर नहीं तो क्यूं ? क्या इस लिये कि ''वाह वाह'' नहीं होगी ! अगर वाह वाह की ख़्वाहिश है तो **रियाकारी** है और रियाकारी की तबाह कारी का आ़लम येह है कि सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : **जुब्बुल हज़न** से पनाह मांगो। अ़र्ज़ किया गया : वोह

क्या है ? फ़रमाया : जहन्नम में एक वादी है कि जहन्नम भी हर रोज़ चार सो मर्तबा उस से पनाह मांगता है उस में क़ारी दाख़िल होंगे जो अपने आ'माल में रिया करते हैं। (اِبن ماجه ج١ص ١٦٦ حديث ٢٥٦ دار المعرفة بيروت) बहर हाल देने में रियाकारी पैदा होती हो तो रक़म ज़ाएअ़ न करे और आख़िरत भी दाव पर न लगाए, नीज़ अगर नोट चलाने से "महफ़िल गर्म" होती हो या'नी ना'त ख़्वां को जोश आता हो म-सलन नोट आने के सबब शे'र की बार बार तक्रार, उस के साथ इज़ाफ़ए अश्आ़र, आवाज़ भी पहले से ज़ोरदार पाएं तो बारह बार सोच लें कि कहीं इख़्लास रुख़्सत न हो गया हो, पैसों के शौक़ में पढ़ने वाले को देना सवाब के बजाए उस की हिर्स की तस्कीन का ज़रीआ़ बन सकता है इस लिये देने वालों को भी इस में एह़तियात़ करनी चाहिये और ना'त ख़्वां के इख़्लास का ख़ून करने की कोशिश नहीं करनी चाहिये। हां येह याद रहे कि देखने सुनने वाले को किसी **मुअ़य्यन** ना'त ख़्वां पर बद गुमानी की इजाज़त नहीं।

ना'त ख़्वानी और दुन्यवी कशिश

जहां ख़ूब नोट निछावर होते हों वहां ना'त ख़्वां का एहतिमाम के साथ जाना, इख़्तिताम तक रुकना मगर ग़रीबों के यहां जाने से कतराना, ह़ीले बहाने बनाना, या गए भी तो दुन्यवी कशिश न होने के सबब जल्द लौट जाना सख़्त महरूमी है और ज़ाहिर है कि इख़्लास न रहा। अगर पैसे, खाना या अच्छी शीरीनी मिलने की वजह से मालदार के यहां जाता है तो सवाब से महरूम है और येही खाना और शीरीनी उस का सवाब है। यूंही ग़रीबों से कतराना और मालदारों के सामने

बिछे बिछे जाना भी दीन की तबाही का सबब है मन्क़ूल है : "जो किसी ग़नी (या'नी मालदार) की उस के ग़ना (या'नी मालदारी) के सबब तवाज़ोअ़ करे उस का दो तिहाई दीन जाता रहा ।" (کشف الخفاء ج۲ ص ۲۱۵ دار الکتب العلمیۃ بیروت) अ़-दमे शिर्कत (या'नी शरीक न होने) के लिये झूटे हीले बहाने बनाना म-सलन थकन व मरज़ वग़ैरा न होने के बा वुजूद, मैं थका हुवा हूं, त़बीअ़त ठीक नहीं, गला ख़राब हो गया है वग़ैरा ज़बान या इशारे से कहना मम्नूअ़ व ना जाइज़ और ह़राम है ।

ना जाइज़ नज़राना दीनी काम में सर्फ़ करना कैसा ?

अगर कोई ना'त ख़्वां सरा-ह़तन या दला-लतन मिलने वाली उजरत या रक़म का लिफ़ाफ़ा ले कर मस्जिद, मद्रसे या किसी दीनी काम में सर्फ़ कर दे तब भी उजरत लेने का गुनाह दूर न होगा । वाजिब है कि ऐसा लिफ़ाफ़ा या तोह़फ़ा वग़ैरा क़बूल ही न करे । अगर ज़िन्दगी में कभी क़बूल कर के ख़ुद इस्ति'माल किया या किसी नेक काम म-सलन मद्रसे वग़ैरा में दे दिया है तो ज़रूरी है कि तौबा करे और जिस जिस से जो लिया है उस को वापस लौटाए, वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को दे वोह भी न रहे हों या याद नहीं तो फ़क़ीर पर तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) करे । हां चाहे तो पेश करने वाले को सिर्फ़ मश्वरा दे दे, कि आप अगर चाहें तो येह रक़म ख़ुद ही फ़ुलां नेक काम में ख़र्च कर दीजिये ।

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने चादर अ़ता फ़रमाई

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी ना'त शरीफ़ सुन कर सय्यिदुना इमाम श-रफ़ुद्दीन बूसीरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى को ख़्वाब में "बुर्दे यमानी" या'नी "य-मनी चादर" इनायत फ़रमाई और बेदार

होने पर वोह चादर मुबारक उन के पास मौजूद थी । इसी वजह से इस ना'त शरीफ़ का नाम **क़सीदए बुर्दा** शरीफ़ मश्हूर हुवा । अगर इस वाक़िए को दलील बना कर **कोई कहे कि ना'त ख़्वां को नज़राना देना सुन्नत और क़बूल करना तबर्रुक है तो इस का जवाब येह है** कि बेशक सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़ता फ़रमाना सर आंखों पर । यक़ीनन सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अक़्वाल व अफ़्आ़ले मुबा-रका ऐन शरीअ़त हैं । मगर याद रहे ! सरकारे आ़लम मदार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने **बुर्दे यमानी** अ़ता करने का तै़ नहीं फ़रमाया था न ही مَعَاذَاللّٰه इमाम बूसीरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى ने शर्त रखी थी कि चादर मिले तो पढ़ूंगा बल्कि उन के तो वह्मो गुमान में भी नहीं था कि **बुर्दे यमानी** इ़नायत होगी । आज भी इस की तो इजाज़त ही है कि न उजरत तै़ हो और न ही दला-लतन साबित (या'नी **UNDER STOOD**) हो और ना'त ख़्वां के वह्मो गुमान में भी न हो और अगर कोई करोड़ों रुपै दे दे तो येह लेना देना यक़ीनन जाइज़ है । और जिस ख़ुश नसीब को सरदारे **मक्कए मुकर्रमा,** सरकारे **मदीनए मुनव्वरह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कुछ अ़ता फ़रमा दें, ख़ुदा की क़सम ! उस की सआ़दतों की मे'राज है । और रहा सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मांगना, तो इस में भी कोई मुज़ा-यक़ा नहीं और अपने आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से मांगने में ना'त ख़्वां व ग़ैर ना'त ख़्वां की कोई क़ैद भी नहीं, हम तो उन्हीं के टुकड़ों पे पल रहे हैं । सरकारे वाला तबार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़नायत निशान है : **اِنَّمَا اَنَا قَاسِمٌ وَّاللّٰهُ يُعْطِىْ** या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ अ़ता करता

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (حاكم)

है और मैं तक़्सीम करता हूं। (بُخاری ج۱ ص۴۳ حدیث ۷۱ دارالکتب العلمیة بیروت)

रब है मुअ्ती येह हैं क़ासिम रिज़्क़ उस का है खिलाते येह हैं

ठन्डा ठन्डा मीठा मीठा पीते हम हैं पिलाते येह हैं

ना'त ख़्वां और खाना

क़ारी व ना'त ख़्वां को खाना पेश करने के सिल्सिले में **मेरे आक़ा आ'ला हज़रत** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : पढ़ने के इ़वज़ खाना खिलाता है तो येह खाना न खिलाना चाहिये, न खाना चाहिये और अगर खाएगा तो येही खाना इस का सवाब हो गया और (या'नी मज़ीद) सवाब क्या चाहता है बल्कि जाहिलों में जो येह दस्तूर है कि पढ़ने वालों को आ़म हिस्सों से दूना (या'नी डबल) देते हैं और बा'ज़ अह़मक़ पढ़ने वाले अगर उन को औरों से दूना न दिया जाए तो इस पर झगड़ते हैं। येह ज़ियादा लेना देना भी मन्अ़ है और येही उस का सवाब हो गया قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى (या'नी अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है) :

لَا تَشْتَرُوْا بِاٰیٰتِیْ ثَمَنًا قَلِیْلًا ۫ (پ۱، البقرة ۴۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मेरी आयतों के बदले थोड़े दाम न लो।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 663)

सब के लिये खाना

इसी सफ़ह़े पर एक दूसरे फ़तवे में इर्शाद फ़रमाया : जब किसी के यहां शादी में आ़म दा'वत है जैसे सब को खिलाया जाएगा, पढ़ने वालों को भी खिलाया जाएगा उस में कोई ज़ियादत

व तख़्सीस न होगी (या'नी दूसरों के मुक़ाबले में न ज़ियादा मिलेगा न ही कोई स्पेश्यल डिश होगी) तो येह खाना पढ़ने का मुआ़-वज़ा नहीं, खाना भी जाइज़ और खिलाना भी जाइज़ । (ऐज़न)

आ'ला ह़ज़रत के फ़तवे का ख़ुलासा

क़ारी और ना'त ख़्वां की दा'वत से **मु-तअ़ल्लिक़** इमामे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़तावा से जो उमूर वाज़ेह़ हुए वोह येह हैं : ﴾1﴿ खाना खिलाने वाले के लिये जाइज़ नहीं कि वोह इन नेक कामों की उजरत के त़ौर पर मज़्कूरा अफ़राद को खाना खिलाए ﴾2﴿ क़ारी और ना'त ख़्वां के लिये ना जाइज़ है कि वोह बत़ौरे उजरत दा'वत खाएं ﴾3﴿ उजरत की सूरतें पीछे बयान कर दी गईं लिहाज़ा ''उजरत के खाने'' को नफ़्स की ह़िर्स की वजह से ''नियाज़'' कह कर मन को मना लेना इस खाने को ह़लाल नहीं कर देगा लिहाज़ा मज़्कूरा अफ़राद में से कोई क़िराअत या ना'त शरीफ़ पढ़ने के बा'द ''सरा-ह़तन या दला-लतन तै़शुदा ख़ुसूसी दा'वत'' क़बूल करते हुए खाएगा तो सवाबे उख़्रवी से मह़रूम रहेगा बल्कि येही खाना चाय बिस्किट वग़ैरा इस का अज्र हो जाएगा ﴾4﴿ अगर आ़म दा'वत हो (या'नी वोह ना'त ख़्वां ग़ैर ह़ाज़िर होता जब भी येह दा'वत होती) तो अब ज़िम्नन उन मज़्कूरा अफ़राद को खिलाने और इन अफ़राद के खाने में कोई मुज़ा-यक़ा नहीं ﴾5﴿ अगर दा'वत तो आ़म हो मगर क़ारी या ना'त ख़्वां के लिये ख़ुसूसी खाने का एहतिमाम हो म-सलन लोगों के लिये सिर्फ़ बिरयानी और इन के लिये सलाद, राइते और चाय का भी एहतिमाम हो या दीगर लोगों को एक एक ह़िस्सा और इन को

ज़ियादा दिया जाए तो वोह ख़ुसूसिय्यत व ज़ियादत (या'नी मख़्सूस ग़िज़ा और इज़ाफ़ा) उजरत होने के बाइस फ़रीक़ैन के लिये **ना जाइज़ व ह़राम** और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । लेकिन येह याद रहे कि इस में भी वोही शर्त़ है कि पहले से सरा-ह़तन या दला-लतन तै़ हो तब ह़राम है वरना अगर तै़ न था और इस के बिग़ैर ही एहतिमाम हुवा तो फिर जाइज़ है ।

क्या हर ह़ाल में दा'वत क़बूल करना सुन्नत है ?

अगर ना'त ख़्वां और क़ारी साह़िबान येह कहें कि हम ने न तो इस ख़ुसूसी दा'वत के लिये कहा था और न ही उजरत के त़ौर पर खाते हैं बल्कि दा'वत क़बूल करना सुन्नत है इस लिये तबर्रुक समझ कर नियाज़ खा लेते हैं, ऐसा कहने वालों को ग़ौर करना चाहिये कि अगर किसी इज्तिमाए़ ज़िक्रो ना'त के मौक़अ़ पर नियाज़ के नाम पर[1] ''ख़ुसूसी दा'वत'' न की जाए तो क्या अपनी दिली कैफ़िय्यात में तब्दीली नहीं पाते ? क्या उन्हें इस बात का एह़सास नहीं होता कि कैसे अ़जीब (बल्कि مَعَاذَاللّٰه) कन्जूस लोग हैं कि पानी तक का नहीं पूछा ? क्या आयन्दा उस जगह पर ना'त ख़्वानी के लिये आने में बे रग़बती नहीं होगी ? अगर मज़्कूरा अफ़राद अपनी दिली कैफ़िय्यात तब्दील नहीं पाते और आने वाले वसाविस को नफ़्सो शैत़ान की शरारत क़रार देते हुए ज़ियाफ़त न करने वाले की किसी के सामने न शिकायत करते हैं न ही आयन्दा ऐसी जगह जाने से कतराते हैं, नीज़ दीगर ग़रीब इस्लामी

1: अह्लुल्लाह के ईसाले सवाब के लिये नियाज़ करना बड़ी नेकी है, मगर उजरत के हुक्म में आने वाली ख़ुसूसी दा'वत को नियाज़ का नाम नहीं दिया जा सकता ।

भाइयों की दा'वत क़बूल करने में भी पसोपेश से काम नहीं लेते तो उन पर आफ़रीन है, ऐसे ना'त ख़्वां क़ाबिले सताइश हैं मगर दिलों की ह़ालत ऐसी होती है..... या नहीं ? येह क़ारी व ना'त ख़्वां ह़ज़रात ख़ूब जानते हैं, अपने दिल की गहराई में झांक कर इस का फ़ैसला ख़ुद ही कर लें।

अल्लाह करे दिल में उतर जाए मेरी बात

वस्वसों में मत आइये

मोह़तरम ना'त ख़्वां ! मुम्किन है शैत़ान आप को त़रह़ त़रह़ के वस्वसे डाले, बहकाए और येह बावर करवाने की कोशिश करे कि तू तो मुख़्लिस है, तेरा कोई क़ुसूर नहीं, लोग तुझे मजबूर करते हैं, और येह भी बेचारे **मह़ब्बत** की वजह से बख़ुशी ऐसा करते हैं, किसी का दिल नहीं तोड़ना चाहिये, तू सब कुछ क़बूल कर लिया कर और यूं भी येह तेरे लिये तबर्रुक है। नीज़ अगर कोई ना'त ख़्वां नाबीना या मा'ज़ूर हो तो उस को वस्वसे के ज़रीए मात करना शैत़ान के लिये मज़ीद आसान होता है। देखिये ! **नाबीना** हो या बीना (या'नी देखता) हुक्मे शरीअ़त हर एक के लिये वोही है जो मेरे **आक़ा आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के फ़तावा की रोशनी में बयान किया गया। हम सब का इसी में भला है कि **ह़राम** खाने, खिलाने से बचें। नफ़्स की चाल में आ कर शर-ई फ़तावा के मुक़ाबले में अपनी मन्तिक़ बघार कर सादा लौह़ अ़वाम को तो झांसा दिया जा सकता है मगर **ह़राम** फिर भी ह़राम ही रहेगा। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम सब को ह़राम खाने पहनने से बचाए।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ह़राम लुक़्मे की तबाह कारियां

मन्क़ूल है : आदमी के पेट में जब **ह़राम का लुक़्मा** पड़ा, तो ज़मीन व आस्मान का हर फ़िरिश्ता उस पर ला'नत करेगा, जब तक कि वोह **लुक़्मा** उस के पेट में रहेगा और अगर इसी ह़ालत में मरेगा तो उस का ठिकाना **जहन्नम** होगा। (مکاشَفَۃُ القُلُوب ص ۱۰)

ना'त ख़्वानी ए'ज़ाज़ है

प्यारे बुलबुले मदीना ! जो ना'त ख़्वानी की सआ़दत के ए'ज़ाज़ को समझने से मह़रूम हो उसे हुब्बे मालो जाह वग़ैरा की आफ़तें सरमाया दारों, वज़ीरों और अफ़्सरों वग़ैरा के यहां होने वाली मह़फ़िलों में तो (ख़ुदा न ख़्वास्ता नुमाइशी हुई तब भी) ख़ुशदिली से ले जाएंगी मगर ग़रीब इस्लामी भाई जो न ईको साउन्ड की तरकीब बना सके न आव भगत कर सके न ही ग़ुरबत के सबब बेचारा कसीर अफ़राद जम्अ़ कर सके वहां जाने में उस का दिल घबराएगा, जी उक्ताएगा और गला भी "बैठ" जाएगा ! जिन के दिल में वाक़ेई इ़श्क़ो मह़ब्बत और ना'त ख़्वानी की ह़क़ीक़ी अ़-ज़मत है ऐसे आ़शिक़ाने रसूल को ग़रीबों के यहां त़ालिबे सवाब हो कर ह़ाज़िरी देने में कौन सी रुकावट आ सकती है ? अमीर हो या ग़रीब जो भी शर-ई तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ इख़्लास के साथ **इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त** का एहतिमाम करेगा उस का और उस में शरीक होने वाले हर मुसल्मान का اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बेड़ा पार होगा।

मुस्त़फ़ा की ना'त ख़्वानी से हमें तो प्यार है

اِنْ شَآءَ اللّٰه *दो जहां में अपना बेड़ा पार है*

ना'त ख़्वानी ईमान की ह़िफ़ाज़त का ज़रीआ है

ना'त ख़्वानी हुज़ूरे पुरनूर, **शाफ़ेए यौमुन्नुशूर** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी और **महब्बत** की निशानी है और हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सना ख़्वानी और **महब्बत** आ'ला द-रजे की इबादत और ईमान की ह़िफ़ाज़त का बेहतरीन ज़रीआ़ है लिहाज़ा जब भी इज्तिमाए ज़िक्रो ना'त में ह़ाज़िरी हो तो बा अदब रहना चाहिये और मक़्सूद रिज़ाए इलाही हो। जहां इख़्तिताम पर लंगर वग़ैरा का एहतिमाम होता हो ऐसी जगह ताख़ीर से पहुंचना सख़्त मा'यूब और अपने लिये ग़ीबत, तोह्मत और बद गुमानी का दरवाज़ा खोलने का सबब है ऐसों के बारे में बसा अवक़ात इस त़रह़ की गुनाहों भरी बातें की जाती हैं, खाने का लालची है, खाने के वक़्त ही पहुंचता है वग़ैरा। हां जो मजबूर है वोह मा'ज़ूर है।

ना'त ख़्वां की ह़िकायत

अब मुख़्लिस ना'त ख़्वां की फ़ज़ीलत और मा'मूली सी बे एह़तियाती की शामत पर मुश्तमिल निहायत ही इ़ब्रत आमोज़ **ह़िकायत** मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन तरीन "मद्दाहे रसूल" (या'नी ना'त ख़्वां) के **मु-तअ़ल्लिक़** मश्हूर है कि उन्हें जागते में हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की आमने सामने ज़ियारत होती थी। जब वोह सुब्ह़ के वक़्त रौज़ए अत़्हर ह़ाज़िर हुए तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन से अपनी क़ब्रे अन्वर में से कलाम फ़रमाया। येह ना'त ख़्वां अपने इसी मक़ाम पर फ़ाइज़ रहे ह़त्ता कि एक शख़्स ने उन से दर-ख़्वास्त की, कि शहर के ह़ाकिम के पास उस की सिफ़ारिश करें

आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ह़ाकिम के पास पहुंचे और सिफ़ारिश की । उस ह़ाकिम ने आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه को अपनी मस्नद पर बिठाया । तब से आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ज़ियारत का सिल्सिला ख़त्म हो गया फिर येह हमेशा हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ज़ियारत की तमन्ना पेश करते रहे मगर ज़ियारत न हुई । एक मर्तबा एक शे'र अ़र्ज़ किया तो दूर से ज़ियारत हुई, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ज़ालिमों की मस्नद पर बैठने के साथ मेरी ज़ियारत चाहता है इस का कोई रास्ता नहीं।'' ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ली ख़व्वास رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि फिर हमें उन बुज़ुर्ग (ना'त ख़्वां) के मु-तअ़ल्लिक़ ख़बर न मिली कि उन को सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई या नहीं ह़त्ता कि उन का विसाल हो गया । (میزانُ الشّریعة الکبریٰ ص ٤٨) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।**

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

जो लोग ज़ाती मफ़ाद की ख़ातिर अरबाबे इक़्तिदार के आगे पीछे फिरते, कभी किसी वज़ीर या सद्र वग़ैरा के यहां मौक़अ़ मिले तो उड़ते हुए ह़ाज़िर हो जाते, सद्र तमग़ा पहना दे या हाथ मिला ले तो उस की तस्वीर आवेज़ां करते दूसरों को दिखाते और इस को बहुत बड़ा ए'ज़ाज़ तसव्वुर करते हैं उन के लिये गुज़श्ता ह़िकायत में बहुत कुछ दर्से इ़ब्रत है

اَلْعَاقِلُ تَكْفِيْهِ الْاِشَارَةُ या'नी अ़क़्ल मन्द के लिये इशारा काफ़ी है ।

प्यारे ना'त ख़्वां ! अगर आप रूह़ानिय्यत चाहते हैं, तो सामिई़न की कसरत व क़िल्लत को मत देखिये, चाहे हज़ारों का इज्तिमाअ़ हो या

फ़क़त एक ही फ़र्द, उसी लगन और धुन के साथ आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के तसव्वुर में डूब कर ना'त शरीफ़ पढ़िये, बल्कि तन्हाई में भी सना ख़्वानी की आ़दत बनाइये। ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के इस शे'र को सिर्फ़ रस्मी त़ौर पर पढ़ने के बजाए इस की ह़क़ीक़त की त़रफ़ भी मु-तवज्जेह रहिये।

दिल में हो याद तेरी गोशए तन्हाई हो
फिर तो ख़ल्वत में अ़जब अन्जुमन आराई हो

اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ फिर तो.....

जल्वे ख़ुद आएं त़ालिबे दीदार की त़रफ़

अगर कोई बात ग़लत़ पाएं तो मेरी इस्लाह़ फ़रमा दीजिये। दुआ़ए मग़्फ़िरत का भिकारी हूं।

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत व बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में आक़ा का पड़ोस

29 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1431 सि. हि.
14-2-2010

"ग़ीबत कर के नेकियां बरबाद न करें" के पच्चीस हुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वां के बारे में ग़ीबत के अल्फ़ाज़ की 25 मिसालें

❁ मीरासी है ❁ इस को **ना'त** पढ़ने का ढंग नहीं आता ❁ इस की आवाज़ बस ऐसी ही है ❁ इस की आवाज़ बे सुरी है ❁ फटे हुए ढोल जैसी आवाज़ है ❁ दूसरे **ना'त ख़्वानों** की त़र्ज़ें चुराता है ❁ दूसरों के शे'र चुरा कर ख़ुद शाइ़र बन बैठा है ❁ **पैसों के लिये ना'त पढ़ता है** ❁ येह तो **प्रोफ़ेश्नल** ना'त ख़्वां है ❁ सिर्फ़ **बड़ी पार्टियों** की मह़फ़िलों में जाता है ❁ इस में इख़्लास नहीं है ❁ ज़ियादा लोग हों या ❁ ईको

साउन्ड हो जभी पढ़ता है ❁ जब आता है माईक नहीं छोड़ता ❁ दूसरों की बारी ही नहीं आने देता ❁ जान बूझ कर **रोने** जैसी आवाज़ निकालता है ❁ आहा ! बड़ा महंगा सूट पहन रखा है ज़रूर ना'त ख़्वानी करवाने वालों ने ले कर दिया होगा ❁ इस की अदाएं देखो ! लगता है गाना गा रहा है ❁ इस की आंखें नींद से भरी पड़ी हैं फिर भी पैसों के लालच में ना'त पढ़ने आ गया है ❁ जिस शे'र पर नोटें आना शुरूअ़ हो जाएं बार बार उसी शे'र को पढ़ता रहता है ❁ बस किसी जगह मह़फ़िल का पता चल जाए, येह वहां पैसों के लालच में बिन बुलाए भी पहुंच जाता है ❁ रात गए तक ना'तें पढ़ता है, फ़ज्र मस्जिद में जमाअ़त से नहीं पढ़ता ❁ अब इस के पास टाइम कहां होगा इस के तो सीज़न के दिन हैं, बड़े नोट दिखाओ तो आएगा ❁ पिछली बार शायद पैसे कम मिले थे तभी इस बार नहीं आया ❁ अपना केसिट निकलवाने के लिये कम्पनी वालों की बड़ी चापलूसी करता है ।

"ग़ीबत से हम को बचा या इलाही" के उन्नीस हुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वानी/जल्से या इज्तिमाअ़ में होने वाली ग़ीबत की 19 मिसालें

✿ येह मुबल्लिग़ (या मौलाना या ना'त ख़्वां) कहां खड़ा हो गया अब तो येह माईक नहीं छोड़ेगा ✿ उस की आवाज़ अच्छी है इस लिये क़िराअत सुन कर लोग दाद देते हैं वैसे तज्वीद की काफ़ी ग़-लतियां करता है ✿ उस के तलफ़्फ़ुज़ ग़लत़ होते हैं ✿ इस को तक़रीर करनी ✿ या ना'त पढ़नी

ही कहां आती है ✿ चलो ! चलो ! अब येह लम्बी करेगा ✿ नोटें चलती हैं तो इस की आवाज़ खुल जाती है ✿ हमारे शहर में आने के लिये तो इस ने हवाई जहाज़ का रीटर्न टिकट मांगा था ✿ इस ना'त ख़्वां का मिज़ाज तो आस्मान पर रहता है ✿ इस को तो बस एक ही त़र्ज़ आती है ✿ येह तो दूसरे ना'त ख़्वानों की त़र्ज़ें चुराता है ✿ इस ने बयान की तय्यारी नहीं की इधर उधर की बातें कर के वक़्त गुज़ार रहा है ✿ आयतें तो पढ़ता नहीं बस क़िस्से कहानियां सुनाता है ✿ उस मुक़र्रिर की आवाज़ अच्छी है मगर उस की तक़रीर में ख़ास मवाद नहीं होता ✿ ख़ित़ाब बड़ा जोशीला था मगर दलाइल में दम नहीं था ✿ हमारे ख़त़ीब साह़िब अपने बयान में सुन्नत एक नहीं बताते बस लठ ले कर बद मज़्हबों के पीछे पड़े रहते हैं ✿ आज ख़त़ीब साह़िब के बयान में मज़ा नहीं आया ✿ वोह मौलाना साह़िब जल्से में देर से आने के आ़दी हैं ✿ फुलां की तक़रीर में बस जोश ही जोश होता है अपने पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता ।

"ग़ीबतें करने वाले क़ियामत में कुत्ते की शक्ल में उठेंगे" के चालीस हुरूफ़ की निस्बत से ना'त ख़्वानों के माबैन होने वाली ग़ीबतों की 40 मिसालें

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 505 स-फ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**ग़ीबत की तबाह कारियां**" सफ़ह़ा 410 ता 411 पर है : "ना'त ख़्वानी" निहायत उ़म्दा इ़बादत है, सुरीली आवाज़ बेशक रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ की इ़नायत है मगर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

इस में इम्तिहान बहुत सख़्त है, जिसे इख़्लास मिल गया वोही काम्याब है। बा'ज़ ना'त ख़्वां مَاشَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ज़बर दस्त आशिक़े रसूल होते हैं जो कि बिग़ैर किसी दुन्यवी लालच के आंखें बन्द किये इश्क़े रसूल में डूब कर ना'त शरीफ़ पढ़ते हैं और सामिईन के दिलों को तड़पा कर रख देते हैं जब कि बा'ज़ ला उबाली **चन्चल** और इन्तिहाई ग़ैर सन्जीदा होते हैं, इस त़रह़ के ना'त ख़्वानों में जिन बद नसीबों का दिल ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से ख़ाली होता है, वोह पीछे से एक दूसरे पर जी भर कर तन्क़ीदें करते, ख़ूब ख़ूब **ग़ीबतें** करते, आवाज़ों की नक़्लें उतार कर ठीक ठाक मज़ाक़ उड़ाते और ऊपर से ज़ोरदार क़ह्क़हे लगाते हैं। **अल्लाहु रह़मान** عَزَّوَجَلَّ ह़क़ीक़ी म-दनी ना'त ख़्वां ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के सदक़े इन्हें भी इश्क़े रसूल में रोने रुलाने वाला मुख़्लिस ना'त ख़्वां बनाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم ऐसे ना'त ख़्वानों की इस्लाह़ के जज़्बे के तह़त इन के दरमियान होने वाली मु-तवक़्क़अ़ **ग़ीबतों** की 40 मिसालें अ़र्ज़ करता हूं : ❁ पता नहीं येह मौलवी **माईक** पर कहां से आ गया कि इतनी लम्बी तक़रीर शुरूअ़ कर दी है ! ❁ लोग उक्ता कर उठ उठ कर जा रहे हैं मगर येह है कि माईक ही नहीं छोड़ता ❁ बानिये मह़फ़िल ने लाइट का इन्तिज़ाम ठीक नहीं करवाया ❁ मन्च (स्टेज) पर डेकोरेशन कम थी ❁ इस ने ना'त ख़्वानों को गरमी में मार दिया एक पेड स्टिल फ़ेन ही रख दिया होता ❁ यार ! येह साउन्ड वाला भी बिल्कुल बेकार साउन्ड लाया है ❁ कोर्डलेस (Cordless) माईक की तरकीब भी ठीक नहीं थी ❁ उस ना'त

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहक़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

ख़्वां ने सारा वक़्त ले लिया हमारी बारी ही नहीं आने दी मुझे ताख़ीर से मौक़अ़ दिया ❁ मुझे कम वक़्त दिया ❁ यार ! येह ना'त ख़्वां माईक पर नहीं आना चाहिये था, इस ने रुलाने वाली ना'त पढ़ कर महफ़िल का रुख़ ही बदल डाला, लोग तो झूमाने वाली तर्ज़ पर नोटें लुटाया करते हैं ! ❁ यार ! इस ना'त ख़्वां ने नया कलाम सुना कर बड़ी चालाकी से जेबें ख़ाली करवा ली हैं हमारे लिये कुछ नहीं बचा ! ❁ अरे ! इस को माईक कहां दे दिया ! एक तो आवाज़ बे सुरी है और ऊपर से लम्बी करता है लोग उठ जाते हैं, हम किस के सामने ना'त पढ़ेंगे ? ❁ आ'ला हज़रत का कलाम पढ़ना नहीं आता ❁ पुरानी तर्ज़ में पढ़ता है ❁ पुरसोज़ तर्ज़ें ठीक से नहीं पढ़ पाता ❁ इस को झूमाने वाले कलाम पढ़ने नहीं आते ❁ अ़-रबी कलाम नहीं पढ़ पाता ❁ येह ना'त ख़्वां तर्ज़ें बिगाड़ कर पढ़ता है ❁ फ़ुलां ना'त ख़्वां जहां माल ज़ियादा हो वहीं जाता और वहां के हिसाब से कलाम पढ़ता है ❁ वोह जब ना'त पढ़ता है तो उस का मुंह कैसा बन जाता है ! ❁ अरे उस के ना'त पढ़ने का अन्दाज़ देखा है ऐसा टेढ़ा मुंह कर के गला फाड़ कर सुर बनाता है कि हंसी रोकना मुश्किल हो जाता है ❁ बानिये महफ़िल बड़ा कन्जूस है, जेब में हाथ ही नहीं डालता था ❁ फ़ुलां की आवाज़ ज़रा अच्छी है तो मग़रूर हो गया है ❁ वोह तो भई बहुत बड़ा ना'त ख़्वां है, हम जैसे छोटे ना'त ख़्वानों को तो लिफ़्ट भी नहीं करवाता ❁ मन्च (स्टेज) पर मालदारों को बिठा रखा था ❁ इस के नख़रे बहुत हो गए हैं ❁ तर्ज़ कलाम के मुताबिक़ नहीं थी ❁ ईको साउन्ड पर इस का गला ज़ियादा काम करता है ❁ इस को नज़राने मिलने पर कैसा जोश चढ़ता है ❁ ज़ियादा लोगों में ज़ियादा

खुलता है ❁ फुलां ना'त ख़्वां चूंकि फ़ारिग़ है, इस लिये नई नई तर्ज़ें बनाता रहता है ❁ भई ! वोह तो जैसे बहुत बड़ा ना'त ख़्वां हो महफ़िल में अपनी बारी के वक़्त ही आता और कलाम पढ़ कर चला जाता है ❁ इस और उस ना'त ख़्वां की जोड़ी है येह दोनों किसी को घास नहीं डालते ❁ बार बार एक ही कलाम पढ़ता है ❁ फुलां ना'त ख़्वां की नक़्क़ाली करता है ❁ न जाने किस शाइर का कलाम उठा लाया था ❁ बानिये महफ़िल ने सना ख़्वानों की कोई ख़िदमत ही नहीं की ❁ बानिये महफ़िल ने मुझे टेक्सी का किराया तक नहीं दिया, बहुत कन्जूस निकला ❁ गला फाड़ फाड़ कर खाना सारा हज़्म हो गया, बा'द को मा'लूम हुवा कि बानिये महफ़िल ने सना ख़्वानों के लिये खाने का कोई इन्तिज़ाम ही नहीं किया था ❁ कल जिस के यहां महफ़िल थी वोह बड़ा दिलेर था, कवर खोला तो 1200 रुपै थे ! मगर आज वाला बानिये महफ़िल कन्जूस है 100 रुपल्ली थमा दी !

(इन के इलावा ग़ीबत की बे शुमार मिसालों की मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 505 स-फ़हात की किताब "ग़ीबत की तबाह कारियां" का मुता-लआ कीजिये)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआत, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अदद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि **"मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ **"** अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी इन्आमात"** पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये **"म-दनी क़ाफ़िलों"** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629365
हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुहोल कोम्प्लेक्स, A.J. मुहोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net